International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 206-212

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 206-212
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2018
Accepted: 15-12-2018

डॉ. श्याम गायकवाड
हिन्दी अध्यापक
विरभद्रेश्वर महाविद्यालय, हुमनाबाद, कर्नाटक, भारत

Correspondence
डॉ. श्याम गायकवाड
हिन्दी अध्यापक
विरभद्रेश्वर महाविद्यालय, हुमनाबाद, कर्नाटक, भारत

भीष्म साहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. श्याम गायकवाड

व्यक्तित्व

संवेदना साहित्य सृजन की प्रेरणा है। अतः साहित्यकार मानवीय़ संवेदना से प्रेरित होकर साहित्य का सृजन करते है। एक अच्छे और सफल साहित्यकार के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने परिवेश, और संस्कृति को समझने की क्षमता रखे । और साहित्यकार दूरदृष्टा भी होता है। अतः उसकी दृष्टि सूक्ष्म हो । चिन्तन जितना गहरा, यथार्थ और मानवमूल्यों की उन्नति का प्रेरक होता है, उतनाही टिकाऊ और लोकप्रिय होता है । वह अपने साहित्यकार का स्वर बनकर साहित्य के माध्यम से जन–जन तक पहुँचता रहता है, उसे विशेष काल की आवश्यक्ता नहीं होती, वह हर समय हर मनुष्य के लिए समान होता है, क्योंकि उसके पदचिन्हों पर इतिहास गतीशील है, और उसमें साहित्यकार का जीवन सन्निहित है ।

भीष्म साहनी हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभाशाली श्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक है। साहित्य की विविध विधाएँ, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, नाटक, अनुवाद, संपादन, जीवनी, आदि पर उनकी लेखनी सफलतापूर्वक चली है ।

किसी साहित्यकार के साहित्य को समझने या परखने के लिए उनके जीवन एवं व्यक्तित्व से भलीभाँति परिचित होना आवश्यक है । क्योंकि उनका संपूर्ण जीवन किसी न किसी रूप में उनकी रचनाओं में अवश्य प्रतिबिंबित होता है । इस संदर्भ में भीष्म साहनी के साहित्य को समझने के लिए इनके जीवन एवं व्यक्तित्व का अवलोकन करना समीचीन होगा ।

जन्म

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री भीष्म साहनी का जन्म एक व्यावसायिक मध्यवर्गिय परिवार में ८ अगस्त, १९१५ को रावलपिंडी में हुआ । रावलपिंडी यह शहर वर्तमान पाकिस्तान में है। इनका मूल स्थान पंजाब के शाहपुर जिला में स्थित भेरा नामक कास्बा था । जिसे छोडकर उनके पुरखे रावलपिंडी में जाकर बस गये थे ।

माता पिता

भीष्म साहनीजी के पिता श्री हरबंसलाल साहनी जीविकोपार्जन के लिए रावलपिंडी के 'कमिस्सिरियट' में एक क्लर्क के तौर पर नौकरी करते थे, बाद में नौकरी छोडकर स्वतंत्र रूप से व्यापार करने लगे, उन्होंने बडी गरीबी के दिन देखे थे, और बाद में अपने

ही बलबूते पर कुछ संपत्ती जुटा पाए थे, वे आर्य समाज के जानेमाने क–र कार्यकर्ता थे । समाज सुधार में गहरी दिलचस्पी रखते थे । श्री हरबंसलाल साहनी ने सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों से नाता तोडकर आर्य समाज संस्था के उदात्त विचारों को अपनाकर बालविवाह, परदा,दहेज के खिलाफ और स्त्री शिक्षा जात–पात उन्मूलन, विधवा विवाह के हक के थे।

भीष्म साहनीजी के माताजी का नाम लक्ष्मीदेवी साहनी था। वह धार्मिक वृत्ति की स्त्री थी, श्रीमती लक्ष्मीदेवी अपने पति हरबंसलाल साहनी से कई बातों में भिन्न थी, स्वतंत्र विचारोंवाली थी, कई बार वह अपने पति की और आर्य समाज की कडी आलोचना करती थी, पति की तुलना में भीष्म साहनीजी की माँ श्रीमती लक्ष्मीदेवी दृढ स्वभाववालि महिला थी ।

शिक्षा

हिन्दी संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा घर में अर्जित की । उर्दू और अंग्रेजी की शिक्षा रावलपिंडी के एक स्कूल में १९३१ में मैट्रिकुलेशन तथा १९३३ में इंटरमिडियट कक्षाएँ पास की । १९३३ में लाहोर चले गये। वही गर्वनमेंट कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया । घर लौटकर पिता के साथ व्यापार किया और साथ ही स्थानीय डि.ए.बी. कॉलेज में ऑनरेरी तौर पर पढाने लगे । उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। भीष्मजी की मातृभाषा पंजाबी थी । वे लेखन कार्य हिन्दी में करते थे । पंजाबी, हिन्दी के अतिरिक्त रूसी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार था ।

परिवेश

अखंड हिन्दूस्थान, अंग्रेज के गुलामी से बाहर निकालने के लिए आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की लडाईयाँ लड रहा था । तभी हिन्दूस्तान, हिन्दूस्तान था । हिन्दूस्तान की अपनी पहचान थी। रीति रिवाज, परम्पराएँ थी । इन रीतिरिवाजों के साथ साथ एक तरफ धर्म की रूढिगत मान्यताएँ जहाँ चरमोत्कर्ष पर थी, वहीं उन रूढियों के खिलाफ सम्पूर्ण देश में विरोध हो रहा था । इस संदर्भ में मेरा आशय हिन्दू धर्म को लेकर है । आज का बर्मा, कल का पाकिस्तान, तब हिन्दुस्तान की पूर्वी और पश्चिमी सीमाएँ थी । तब भी हिन्दू–मुस्लिम और सिक्ख–ईसाई आदि जातियाँ गुलदस्ते में पुष्पगुच्छ की तरह रहते थे। सम्पूर्ण भारत में विविधता में एकता थी । हिन्दू धर्म में सुधारवादी आंदोलन चल रहे थे।

उसमें प्रमूख समाज सुधारक राजाराम मोहनराय, देवेंद्रनाथ, टैगोर, केशवचंद्रसेन और दयानंद सरस्वती है । इनके द्वारा स्थापित ब्रम्ह समाज, तत्वबोधिनी सभा, प्रार्थना समाज और आर्य समाज आदि संस्थाएँ हिन्दू धर्म के अंदर कुरीतियों का विरोध करती थी। इन संस्थाओं ने अनमेल विवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, सती प्रथा, धार्मिक पाखण्ड जैसी समस्याओं के उन्मूलन में बहुत बडा योगदान, दिया । एक तरफ पुरानी रुढियाँ समाप्त हो रही थी, तो दूसरी ओर नई मान्यताओं का जन्म हो रहा था ।

विवाह

भीष्मजी के पिताजी ने भीष्मजी की सगाई अपने एक मित्र की लडकी से कर दी । लडकी अनपढ थी । भीष्मजी ने इसका विरोध कर दिया और पिताजी मान गए । सन १९४३ में श्रीमती शीलाजी भीष्मजी के जीवन में जीवन संगीनी बनकर आई । विवाह के पूर्व शीलाजी रावलपिडी डि.ए.वी कॉलेज में बी.ए के अंतिम वर्ष की छात्रा थी। वही पर भीष्मजी अंग्रेजी के अध्यापक थे । यहीं पर अंग्रेजी के क्लास में पढाते समय भीष्मजी से पहली मुलाकात हुई थी । उन्होंने उनके पढाने के ढंग से शीलाजी काफी प्रभावित हुई थी ।

नौकरी

सन १९३७ में लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज में एम.ए की परिक्षा पास करने कि पश्चात कॉलेज में आध्यापन कार्य सुरु किया । उनके पिताजी कपडे का व्यापार करते थे । कुछ दिनोंतक भीष्मजी ने भि कपडे का व्यापार किया । बँटवारे के बाद भीष्मजीने पत्रकरिता के क्षेत्र में भी कार्य किया । १५ अगस्त, १९४७को पंजाब का विभाजन हुआ । और उनका परिवार रावलपिंडी से उजडकर जगह–जगह बिखर गया । इसके बाद भीष्म साहनी और उनकी पत्नि शिलाजी कुछ दिनों तक बंबई में तथा खालसा कॉलेज अमृतसर में उन्होंने अध्यापन कार्य किया । उसके बाद वे दिल्ली आये और स्थाई रूप से दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसेन कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक बने । नौकरी से निवृत्त होने के बाद अपना सारा समय साहित्य सृजन में व्यतित किया।

स्वभाव

भीष्म साहनी स्वभाव से बेहद विनम्र और दयालु है । सहानुभूति और सहनशीलता उनमें अधिक है । उनसे गुस्सा कोसों दूर रहता है । शत्रुओं को भी अपना बनाकर उनके भीतर सोये हुए मनुष्य तक को कुरेदेने वाला

मानवीय गुण उनमें है । भीष्मजी कर्मठ है। उनका रास्ता संघर्षों से होकर बना है । व्यापक जीवन अनुभव ही उनकी साहित्य सृजन की आधार शिला है । इसी बात का उल्लेख भीष्म साहनी जी इस प्रकार करते है– "साहित्य के क्षेत्र में भी मेरे अनुभव वैसे ही स्पष्ट और सिधे–सीधे रहे जैसे जीवन में । मैं समझता हूँ अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज भी नहीं होती । जैसा मैं हूँ, वैसी ही मैं रचनाएँ भी रच पाऊँगा । मेरे संस्कार, अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टी सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं । इनमें से एक भी झूठी होतो सारी रचना झूठी पड जाती है ।"

अभिरुचि

भीष्म साहनी, कहानीकार, उपन्यासकार, के नाटककार के अलावा एक अभिनेता भी है। भीष्म साहनी की रूचि अभिनय के प्रति कॉलेज के दिनों में ही जाग्रत हो गई थी । कॉलेज के दिनों में भीष्मजी ने कई नाटक खेले थे । नाटक में अभिनय के प्रति भीष्मजी में प्रर्याप्त ललक बनी रही उन्होंने अभिनय के लिए कई पुरस्कार भि प्राप्त किए है । भीष्मजी को अभिनय के अलावा हॉकी खेलना बेहद पसंद था। इस संदर्भ में भीष्म जी कहते है– "बी.ए. के बाद मैंने एम.ए में दाखिल इसीलिए लिया था कि मैं हॉकी खेल पाऊँगा ।"

भीष्मजीअपनी रूचियों के संदर्भ में स्वयं कहते है– "बचपन में मेरी रूचि शरारते करने, घर से गायब रहने, कोयला पीस कर स्याही बनाने और गुल्ली–डण्डा खेलने में थी।"

पुरस्कार

हिन्दी प्रगतिशील कहानीकारों में भीष्म साहनी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। उनका साहित्य हिन्दी के समकालीन साहित्य को एक नया पथ: प्रदर्शक सिद्ध होता है । भीष्मजीके सर्वोत्कृष्ट सृजन के लिए उन्हें विविध संस्थाओं ने विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है।

- भाषा विभाग पंजाब द्वारा–शिरोमणि लेखक पुरस्कार सन १९७५ ई.
- साहित्य अकादमी पुरस्कार–तमस उपन्यास पर स्न १९७६ ई.
- आफ्रो–एशियाई लेखक संघ का लोट्स पुरस्कार सन १९८० ई.
- दिल्ली साहित्य कला परिषद द्वारा सन १९७९–८० ई.
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा–बसन्ती उपनास पर स्न १९८५ ई.
- उपन्यास 'मय्यादास कीमाडी' के लिए हिन्दी अकादमी, दिल्ली का सर्वश्रेष्ठ कथा पुरस्कार।
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वार–साहित्य सेवा के लिए सन १९८८ई.
- अंग्रेजि एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदरबाद द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि १९८८ ई.
- हिन्दी उर्दू साहित्य पुरस्कार (लखनऊ) सन १९९० ई.
- भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण अंलकरण १९९८ ई.
- हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'शलाका सम्मान' १९९९ ई.
- मध्य प्रदेश सरकार का मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार
- साहित्य अकादमी की "महत्तर सद्स्यता" भी प्रदान की गयी ।

निधन

हिन्दी साहित्य के यशस्वी कथाकार भीष्म साहनीजी का निधन ११ जुलाई, २००३ को हुआ । इस समय उनकी आयु ८३ वर्ष की थी। संघर्षशील साहित्यकार के आकस्मात निधन से हिन्दी साहित्य जगत में अंधकार छा गया । फिर भी साहित्य शिरोमणि भीष्मजी का नाम हिन्दी जगत में सदा अमर रहेगा। उनकी मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हुए कृष्णा सोबती कहती है– "उनका फलक काफी विस्तृत था । उन्होंने अपनी शर्तोंपर अपने कद् को ऊँचा किया । अपर्णा सेन कहती है– "वे बेहतरीन इन्सान थे और उनकी यादें अब मेरी धरोहर है ।"

कृतित्व

भीष्म साहनी प्रसिद्ध साहित्यकार रहे है । उन्होंने साहित्य के अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई, लेकिन वे उपन्यासकार के रूप में ही प्रसिद्ध हुए । उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, जीवनी, बालसाहित्य जैसी विधाओं में लेखन कार्य किया है ।

कहानी

भीष्मजी ने १९५३ १९८९ इसवी तक अनेक कहानियाँ लीखी है, उनके आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है– भाग्यरेखा (१९५३), पहला पाठ (१९५७),भटकती राख (१९६६), पटरियाँ (१९७३), वाडचू (१९७८), शोभा यात्रा (१९८१), निशाचर (१९८३) पाली (१९८९) आदि ।

भाग्यरेखा

भीष्म सहानी का पहला कहानी संग्रह है । इस कहानी संग्रह में कुछ चौदह कहानियाँ है । इसमें एक तरफ

लोककथा को पृष्टभुमि बनाकर 'आनोखी हाडी' नामक कहानी का सृजन किया है, तो दूसरी और ग्रामीण संवेदना को वहन करनेवालि 'ज्योत' है । 'ज्योत' के अंत में फंतासी का भी सफल प्रयोग किया है । 'देवता और रेंजर' इस कहानी में अफसर वर्ग पर व्यंग्य करता गया है। तो 'खून्के छींटे' गाँव के भीभस्त यथार्थ से साक्षात्कार कराती कहानी है। 'नीली आँखे' दो गरीब युवक–युवती की प्रेम कहानी है ।

पहला पाठ

भीष्म साहनी का दूसरा कहानी संग्रह 'पहला पाठ'में 'चीफ की दावत' नामक कहानी भी संग्रहीत है, जो भीष्म साहनी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है । इसमें लेखक ने मध्यवर्ग के खोखलेपन और उसकी मूल्यहीनता कि ओर संकीत किया है । कृत्रिम प्रदर्शन प्रियता और व्यस्त स्वार्थ का रूप प्रस्तुत कहानी का कथ्य है । 'रानी मेहतो' उपदेशपरक कहानी है, जिसका प्रतिपाद्य है श्रम और निष्ठा की कमाई ही सुख और शांति ला सकती है। 'बाप बेटा'कहानी में शोषितों की व्यथा का चित्रण है । 'काँटे की चुभन', पाप पुण्य, एष धर्म सनातन' आदि कहानियों में धर्म का विकृत रूप तथा धार्मिक स्पर्धा को उजागर किया है ।

भटकती राख

भीष्मजी का तीसरा कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में बीस कहानियाँ है 'भटकती राख' जनकल्याण की अमर स्मृति की कथा है । 'माता–विमता' 'यादे' 'खून का रिश्ता' 'बात की बात' 'सिफारिशी चि–ी', 'एक रोमांटिक कहानी', 'नई हवेली', 'सिर का सिंह' 'कुछ और साल', 'इपला', 'पास फेल', 'प्रोफेसर', 'कच्छेरे', 'अपने बच्चे', 'गीता सुनहरी किरण', 'साये, नायक प्रधान कहानियाँ है प्रोफेसर, कहानी में भ्रष्ट और अवसरवादी मध्यवर्गीय प्राध्यापक का चरित्र उभरा है ।

पटरियाँ

इस कहानी संग्रह में चौदाह कहानियाँ है। अमृतसर आ गया, पटरिया, ललक, मौका–फरस्त, इंद्रजाल, आभी तो मैं जवान हूँ, तस्बीर, ढोरे–ढोलक, जख्म, भगोडा आदि कहानियाँ संग्रहित है । इन कहानियों में हीन भावना से ग्रस्त मध्यवर्गीय व्यक्तिकी छटपटाहट सांप्रदायिक तनाव,अभावों से उत्पन्न कुंठाओं और हीन भावनाओं, सिद्धांत भ्रष्ट मार्क्सवादीयाँ, लाचार विधवाओं की पीडा, स्वार्थ परक राजनीति, वेश्याओं के जीवन की व्यथा, मानवीय अंतर्द्वन्द्व तथा जीजीविषा आदि का प्रभावपूर्ण विवेचन हुआ है। 'पटरियाँ' एक उच्च शिक्षित व्यक्ति की कहानी है। जिसके माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं की व्यंजना सूक्ष्म ढंग से की गयी है । 'अभी तो मैं जवान हूँ' कहानी में वेश्याओं के जीवन का यथार्थ चित्रण है। 'तस्बीर' कहानी में लाचार विधवा की दर्दनाक यातनाओं को वाणी देने का प्रयास किया गया है। 'ढोलक' कहानी में हीनता ग्रस्त आधुनिक युवक पर करारी चोंट है, तो 'भगोडा' में मनुष्य का सत्य मनुष्य के हृदय में खोजने का प्रयास है।

वाङचु

वाङचु कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संकलित है । 'सागमीट', मालिक का बंदा, गलमुच्छे, राधा–अनुराधा, अहंब्रहमास्मि, खण्डहर, खुंटे, पिकनिक, मांस, ओ हरामजादे, वाङचु, आदि । इन कहानियों में वर्तमान जीवन की विषमता, मध्यवर्गीय किशोरी के असफल प्रेम की दारुण कथा, विभिन्न क्षेत्रों में मोहभंग की स्थिति, विदूपों के प्रति व्यंग्यात्मक दृष्टि, प्रवासी भारतियों की मनोव्यथा का मार्मिक विवेचन हुआ है।

शोभायात्रा

कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संकलित है । निमित्त, खिलौने, मेड इन इटली, भटकाव, फैसला, शोभायात्रा आदि। इन कहानियों में संस्कारों के टकराव, नैतिक मूल्यों के विघटान, महानगरीय जीवन की व्यस्तता, और संवेदनहीन शून्य अवसरवादी व्यव्हारिकता को अभिव्यक्त किया है ।

निशाचार

कहानी संग्रह में चौदह कहानियाँ संग्रहीत है। चाचा मंगल सेन, कण्ठहार, सलमा आपाय, संभल के बाबू, दिवास्पन, जहूर बक्श, विकल्प,पोरवर निशाचर, आदि । इन कहानियों में मनुष्य की मिथ्या प्रदर्शन प्रियता मनुश्य केआत्मीक की कुरुप त्रासदी, शोषित और शोषक वर्ग के बीच संघर्ष, रचनाकार का रचना के प्रति लगाव और भारतिय नारी की पराधीन मानसिकता आदि सामाजिक विषयों को प्रस्तुत किया है। 'निशाचर' कहानी में वर्तमान का नग्न यथार्थ आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त माता के वात्सल्य को चुनौती देता दिखाया गया है। तो 'संभल के बाबू' में श्रमिक वर्ग की अपने अधिकार के प्रति जागरूक चेतना को रेखांकित किया है ।

पाली

कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संग्रहित है । पाली, झुटपटा, सेमिनार, खुशबू, चोरी, आवाजे, इन कहानियों में धार्मिक रूढियों की मूल्यहीनता, साहित्यकारों की सृजनशीलता के प्रति निष्ठा और रचना के सम्मान में आत्मतोष का भाव, सांप्रदायिक दंगों के पीछे असामाजिक तत्वों की सक्रियता, मनुष्य की अनाहत लोभवृत्ति माँ की विलक्षण मलता, विभिन्न संप्रदायों के लोगों में समान रूप से विद्यामान मानवीय तत्व और न्याय निष्ठा और दो शहरों की सांस्कृतिक भिन्नता आदि का प्रभावपूर्ण विवेचन हुआ है।

नाटक

भीष्म साहनीजी एक नाटककार के रूप में पूर्ण सफल रहे है। हानुश, कबिरा, खडा बाजार में माधवी, मुआवजे आपके प्रसिद्ध नाटक है । भीष्मजी एक कलाकार होने के कारण नाटकिय शिल्प की सभी बारिकिया, मंच सज्जा, अभिनय क्षमता की जानकारी खूब थी । यहाँ पर भीष्मजी के प्रसिद्ध नाटक हानुश का संक्षित्प परिचय करना हमारा अभीष्ट है ।

कबीरा खडा बाजार में

इस नाटक की वस्तु अत्यंत संक्षिप्त है । इस नाटक में कबीर के जीवनी के साथ–साथ मध्ययुगीन भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक विषमता, धर्मान्धता और कबीर के विद्रोही और संघर्षशील व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है।

भीष्म साहनी नें उपन्यास कहानी के अतिरिक्त संस्मरण, आत्मपरक लेख, निबंध, आलोचना सामाजिक विषयों पर वैचारिक लेख तथा साहित्यिक लेख भी लिखे है। अपनी बात साहनीजी से १९८७ तक लिखे गये निबंधों का संग्रह है।

जीवनी

'मेरे भाई बलराज' में भीष्म साहनी ने अपने बडे भाई तथा अभिनेता बलराज साहनी के जीवन के अंतरंग क्षणों को रेखांकित किया है । जीवन में आये उतार चढाव का मार्मिक चित्रण हुआ है। इसमें 'बचपन' लाहोर में लाहोर से वापसी, फिर से लाहोर में, सेवाग्राम में, इंग्लैंड्से वापसी, सिनेमाजगत, लेखन घर–परिवार, पुनश्च आदि पर दृष्टि डाली गई है।

बालसाहित्य

आज का वर्तमान वैज्ञानिक युग पाश्चात्य संस्कृति कीओर आग्रसार हो रहा है । परिणाम यह हो रहा है कि बच्चे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से अपरिचित हो रहे है। उनमें नम्रता का अभाव और उदण्डता का प्राचुर्य दिखाई दे रहा है। इसमें बच्चों की उदण्डता से बचाने के लिए संदेश दिया है। गुलेल का खेल (१९८९) उपन्यास, कहानी, नाटक के रचियता भीष्म सहानी बाल साहित्य में पीछे नहीं रहे । उन्होंने छोटे बच्चों के लिए बाल–साहित्य भी लिखा है । इसके अंतर्गत 'गुलेल का खेल' और वापसी उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ है।

'गुलेल का खेल' में बोधराज नामक बालक को पृष्ठभूमि बनाकर उसके उदण्ड, हिंसक वृत्ती को दर्शाया गया है। उसे लोग राक्षस नाम से संबोधित करते है । छटी कक्षा में पढनेवाला बोधराज अन्य विद्यार्थियों से अलग है। वह अपने सह–पाठियों को विलक्षण कहानियाँ सुनाता है । और उसका समाधान अपने तरीके से करता है। उसने किसी से सुना था की काली स्याही पीने से मंद बुद्धी तेज हो जाती है। अध्यापक की मार से बचन के लिए मेंढक की चर्ची लगाना पक्षियों के घोसले तोडना, अण्डे फोडना, गुलेल से पक्षियों को मारना, निरर्थक घुमते रहना उसकी आदत सी बन गयी थी।

लेखक के पिताजी को पदोन्नती होती है। उन्हें रहने के लिए एक पुराना बंगला दिया जाता है । यह बंगला गाँव से दूर है। एकांत बंगले में अनेक प्रकार के पक्षी अपना घोंसला बना लेते है इसलिए बंगले में चारों और गंदगी फैल गई है । इस गंदगी से बचने के लिए लेखक की माँ को बोधराज की याद आ जाती है। बोधराज को पक्षियों के घोंसले उजाडने में अधिक रूचि है । वह उन्हें साफ करने के लिए बोधराज से कहती है । यह घटना बोधराज के जीवन में परिवर्तन लाती है।

गोदाम में पहुँचकर बोधराज मैंना के बच्चों का करुण स्वर सुनता है । वे चील के प्रहार से भयभीत है । बच्चों का करुण स्वर ही उसका हृदय परिवर्तन कर देता है । और बोधराज उनका घोंसला उजाडने के बजाय उनके संरक्षण का दायित्व अपने ऊपर ले लेता है । और उस दिन से बोधराज इन पक्षियों की देखभाल करता है । उन्हें दाना डालता है। अब उसके हाथ में न गुलेल है जेब में कंकड । बोधराज मैना के बच्चों का हितैषी और संरक्षक बन जाता है । इस तरह बुरे से बुरे व्यक्ति में भी विकास की संभावनाएँ होती है।

वापसी १९८९, भीष्म साहनी की यह बालोपयोगी दूसरी कहानी है। इस कथा के माध्यम से साहनी ने पशुओं के

माध्यम से मानवीय प्रवृत्तियों का प्रभावपूर्ण रेखांकन किया है । अंततः कहा जा सकता है कि भीष्म जी का बालसाहित्य उपदेशात्मक एवं उपयोगी है।

उपन्यास

उपन्यास साहित्य एक ऐसी विधा है, जो उपन्यासकार के संपूर्ण भाव एवं विचारों का परिचय देती है, इसलिए फॉक्स कहते है "साहित्य में जीवन के विषय में लेखक की राय दरकार नहीं वहाँ जीवन की तस्वीर चाहिए जीवन की यह तस्वीर स्वयं लेखक की दृष्टी को स्पष्ट कर देती है" भीष्म साहनी की रचना दृष्टि के संदर्भ में उपर्युक्त कथन महत्व रखता है। चाहे उनके विचार काल्पनिक हो या वास्तविक परन्तु रचनाकार अपनी कृति के माध्यम से समाज को ऐसी देन देना चाहता है, जिससे सामाजिक परिवेश में परिवर्तन आये और वर्तमान समाज उन बुराइयों से बचे जो युगीन समस्याओं से जुझ रहा है । ऐसी अनेक समस्याएँ तथा दिल को दहलानेवाली घटनाओं को भीष्मजी के उपन्यासों में देख सकते है।

१) झरोखे

भीष्म साहनीजी का प्रथम उपन्यास है जो १९६७ में प्रकाशित हुआ है।इस उपन्यास में मध्यवर्गीय आर्य समाजी परिवार के एक बालक के माध्यम से सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक आदि विषयोंको रेंखांकित किया गया है । सामाजिक समस्याओं में विवाह दाम्पत्य जीवन तथा पुरुष प्रधान समाज का चित्रण आर्थिक तथा निम्न मध्यवर्गिय परिवार आदि का चित्रण है।

२) कडियाँ

'कडियाँ' का शब्दिक अर्थ जोडनेवाली वस्तु होती है। अर्थात दो वस्तुओं को जोडने के लिए जिस वस्तु का उपयोग किया जाता है, उसे कडी कहते है । 'कडियाँ का अर्थ होता है एक से अधिक वस्तुओं को जोडनेवाली वस्तु । इस उपन्यास में कडियाँ शब्द का उपयोग एकही व्यक्ति महेन्द्र को दो नारीयों के जीवन से जोडने के लिए किया गया है । एक प्रेमिका 'सुष्मा' है। तो दुसरी पत्नी 'प्रमिला' है। इन दोनों नारीयों की मनस्थिति के साथ महेंद्र अपना मन जोडने में सफल नहीं होता । यह न पत्नी का बनता है न प्रेमिका का अर्थात इसकी अवस्था'धोबी के कुत्ते के समान बन गया है । इसलिए यह उपन्यास प्रेम प्रधान तथा पारिवारिक समस्या प्रधान उपन्यास है ।

३) तमस

भीष्म साहनी जी का 'तमस' उपन्यास बहुचर्चित उपन्यासों की श्रृंखला में अग्रगण्य है । इस उप्नयास में आजादी के ठीक पहले का पंजाब और सांप्रदायिकता भय के अंधेरे में डूबे वे चंद दीन धार्मिक जडता को इस्तेमाल करती पूँजीपरस्त राजनीति और उससे रक्त–रंजित हजारों बेकसूर लोग । सुअर और गाय को बचा लेने का पुण्य और उसीके लिए होती हुई मनुष्य की हत्याएँ । दंगे–फसाद के पीछे खतरनाक मस्तिष्क । यह एक वातावरण है, जिसे भीष्म साहनी ने 'तमस' में इतिहास बोध के साथ प्रस्तुत किया है ।

४) बसंती

'बसंती' भीष्म सहानी का एक सामाजिक उपन्यास है । जो मानवीय संबंधों के जुडते–टूटते रिश्तों का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

५) मैयादास की माडी

'मैयादास की माडी' उस कालखंड की कहानी कहता है जब पंजाब की धरती पर सिक्ख अमलदारी के पाँव उखड रहे थे और ब्रिटिश हुकूमत अपनी जडे गहरे तक फैलाती जा रही थी । भारतीय इतिहास के इस अहम बदलाव को भीष्मजी ने कस्बाई कथा–भूमि पर चित्रित किया है ।

६) कुंतो

भीष्म सहानी का 'कुंतों' यह उपन्यास १९९३ में प्रकाशित हुआ है । यह उपन्यास अनोखा, नवीनतम और सामाजिक उपन्यास है । भारत विभाजन के पूर्व से आजादी के कुछ समय पाश्चात के मध्यकाल की पृष्ठ्भूमि पर आधारित इस उपन्यास की कथा है । इस उपन्यास में समाज के विभिन्न वर्गों पारिवारिक स्थितियों, बदलती परम्पराओं, आधुनिक मानसिकताओं और नूतन जीवन दृष्टियों का प्रभावपूर्ण समावेश किया गया है।

७) नीलू नीलिमा निलोफर

'नीलू नीलिमा, नीलोफर' यह उपन्यास भीष्म साहनी की रचना इसवी सन २००० में प्रकाशित हुआ है । यह एक प्रेम कहानि है। इस उपन्यास में प्रेम कहानी को आधार बनाकर जाती, धर्म, तथा संप्रदायिकता की समस्या पर प्रकाश डालता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है की भीष्म जी ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा को विविध रूपों से रुपायित किया है। जिससे साहित्य की सभी विधाएँ जीवंत और स्पंदनशील हो उठी है । उनकी सभी कृतियाँ उन्हें सर्वश्रेष्ठ लेखक, सफल कहानीकार, श्रेष्ठ अनुवादक, उच्चकोटि का कलाकार सिध्द करती है । उन्होंने जीवन के कण–कण से बटोरी जानेवाली अनुभूतियों और पग–पग होनेवाले अनुभवों को कहानी, नाटक, बालसाहित्य, उपन्यास में चित्रित किया है। भीष्मजी के समग्र साहित्य में युग का सजीव प्रतिबिंब और जीवन की विविधता का यथार्थ चित्र दृष्टिगोचर होता है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. राजेश्वर सक्सेना एवं प्रताप ठाकूर-भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना
2. डॉ.सुरेश बाबर-भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन
3. डॉ.भारत कुचेकर- भीष्म साहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. रवीन्द्र गासो-भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना